Ashta Lakshmi - Sahaja Yoga Drama

श्री कृष्णा फूलों से सुसज्जित झूले पर विराजमान है. नारद मुनि का प्रवेश।

नारद मुनि - प्रभु की जय हो।

श्री कृष्णा - आओ नारद जी क्या खबर लाये हो - इतने चिंतित क्यों लग रहे हो भाई ?

नारद - प्रभु अब क्या बताऊ - पृत्वी लोक का भ्रमण करके आ रहा हूँ - जो देख कर आया मन विचलित हो गया प्रभु !

श्री कृष्णा - परन्तु क्यों ? ऐसा क्या देख लिया पृत्वी लोक में ?

नारद - मानव बहुत दुखी है प्रभु - बहुत दुखी !

श्री कृष्ण - अच्छा - कैसा दुःख ? किस बात को लेके दुखी है वो लोग ?

नारद - सभी कुछ लेके प्रभु - सब कुछ लेके दुखी है !

श्री कृष्णा - लेकिन मैंने तो सुना है बहुत उन्नति हो गई है पृत्वी लोक में ! लोग अंतरिक्ष तक पहुंच गए और दूसरे ग्रहो में प्राण खोज रहे है (धीमे से हस्ते हुए)

नारद - अब क्या करे प्रभु ! पृत्वी लोक में हाहाकारी और महामारी मची हुई है - शायद इसलिए किसी और ग्रह की खोज में है !

श्री कृष्णा - ओह! अच्छा - तो उन्हें लगता है की दूसरे किसी ग्रह पर जाने से लोगो की सब समस्याओं का हल हो जायेगा ?

(इतने में श्री राधा जी अपने हाथों में डांडिया sticks लाते हुए श्री कृष्णा जी से)

श्री राधा - देखिये मैंने रास लीला के लिए नीले रंग की डांडिया ली है आप कौन सा रंग लेंगे ?

(कुछ सन्नाटा फिर नारद जी बोल उठे)

नारद - हे प्रभु - देखिये ज़रा - यहाँ लोग दुखी और असंतुष्ट है और राधा जी रास का आयोजन कर रही है !

श्री कृष्णा - जिस कारन मनुष्य दुखी है - अर्थ, वैभव, संतोष के अभाव के कारन - उन सब की इच्छाओ की पूर्ति तो लक्ष्मी स्वरूपिणी राधा जी ही कर सकती है ! यह बातें क्या मानव जात भूल गए है ?

नारद - सच प्रभु ? वो कैसे ?

श्री कृष्णा - यह तो राधा जी से ही पूछ लो !

नारद - माते कृपा कर हमें भी बताये की किस प्रकार मनुष्यों की दुविधा दूर की जा सकती है !

राधा जी - क्यों अष्टलक्ष्मी रूपों के बारे में तो बहुत पहले से ही पृत्वी लोक को अवगत करा दिया गया है - इसमें कोई नई बात तो नहीं !

नारद - कृपया फिर से हमें बताये माते !

श्री राधा - तो सुनो लक्ष्मी जी के आठ स्वरूपों के बारे में जानो और पृत्वी लोक को फिर से इन्हे जागृत करने के उपाए बता दो - हो सकता है मनुष्य पृत्वी लोक पर रहकर ही समस्या का हल निकाल ले - और किसी दूसरे ग्रह की खोज न करनी पड़े - (श्री कृष्णा की ओर देख हस्ते हुए)

सबसे पहले श्री आद्यलक्ष्मी जी का जन्म हुआ। उन्हें महालक्ष्मी भी कहा जा सकता है। समुद्र मंथन के समय इनकी उत्पत्ति हुई , इन्ही को प्राप्त करने के लिए बाकि सब लक्ष्मी स्वरूपों की उत्पत्ति हुई। जैसे की श्री विद्या लक्ष्मी - इनके आशीर्वाद के द्वारा ही हम श्री आद्यलक्ष्मी की प्राप्ति कर सकते है। आध्यात्मिक विद्या के कारन ही हम परमेश्वरि शक्ति को सँभालने की विधि सीख सकते है।

नारद - विद्या लक्ष्मी जी के द्वारा आद्यलक्ष्मी जी की प्राप्ति ? मतलब?

श्री कृष्णा - मतलब जलसम बन जाना ! जल के बिना मनुष्य जी नहीं सकता और जल स्वच्छ करता है - स्वयं को और दुसरो को भी ! ये एक बहुत ही बड़ा आशीर्वाद है जो मनुष्य श्री विद्या लक्ष्मी की आराधना से प्राप्त कर सकता है।

नारद - जलसम बन जाना?! ये कैसे हो सकता है प्रभु?

श्री राधा – जीवन का प्रारंभ ही जल में ही हुआ| फिर जीवन पृथ्वी पर आई| जीवन यानी चेतना आना अन्यथा सब निर्जीव है| समुद्र का गुण है कि वह सभी बाधाओं को अपने में समा लेता है उसी प्रकार जब श्री आद्यलक्ष्मी का तत्व मनुष्य में जागृत होता है तब वह अपने आसपास के लोगों की एवं वातावरण की समस्याओं को स्वयं में समा लेता है|श्री आद्यलक्ष्मी की कृपा से स्वच्छ होकर मनुष्य सभी गंभीर चीज़ो को, प्रकाश को तथा विस्मृत चीज़ो को देख सकता है - और उसका चेहरा तेजोमय हो उठता है !

नारद - किस उम्र से मनुष्यों को इनकी आराधना शुरू करनी चाहिए प्रभु?

श्री कृष्णा- आद्य यानी प्रारंभ ! हमारे गुणों का प्रारंभ - जिसकी शुरुआत बालपन से होती है . यही मनुष्य के अंदर धर्म की नींव है| अबोधिता के अभ्यास से मनुष्य पवित्रता में स्थापित होता है| बालपन अबोधिता का प्रारंभ है| इसलिए किसी भी

शिशु के पालन पोषण में अत्यंत प्रेम, करुणा, धैर्य का होना आवश्यक है| यदि जड़ों में इन गुणों का अभाव हो तो अबोधिता शिशु में पूर्णता स्थापित नहीं होती|

नारद - बालपन में प्राप्त अबोधिता के गुण को कैसे कायम रखा जा सकता है प्रभु?

श्री राधा - यह कार्य नारी पर निर्भरशील है ! जीवन एक नारी ही जन्म देती है और उसकी चेतना को एक मर्यादा आदर्श उसके जीवन के स्वभाव में स्थापित करती है| बच्चों की देखरेख लालन पालन करने की जिम्मेदारी नारी पर अधिक होती है | अपनी सारी अच्छी बातें बच्चों को एक नारी अपने माँ के स्वरुप में करती है. माँ ही बाद में परमेश्वरि ज्ञान का उपयोग करना अपने बच्चो को सिखाती है |

नारद - एक माँ किस प्रकार से परमेश्वरि ज्ञान प्राप्त करेगी?

श्री कृष्णा - परमेश्वरि ज्ञान को गरिमापूर्वक किस प्रकार उपयोग करना है ये आशीर्वाद श्री विद्या लक्ष्मी प्रदान करती है।

नारद - परमेश्वरि ज्ञान अर्थात?

श्री कृष्णा - अर्थात किस प्रकार माँ कुण्डलिनी शक्ति का जागरण किया जाये, किस प्रकार स्वयं की शुद्धिकरण की जाये , किस प्रकार सभी देवी देवताओं को जागृत किया जाये तथा खुद के जागृखता के पस्चात दूसरों में इस विद्या को किस प्रकार बांटा जाये - यह सभी ज्ञान, इसके बारे में सभी विज्ञान विद्या कहलाती है - इसी ज्ञान की लक्ष्मी को श्री विद्यालक्ष्मी के नाम से जाना जाता है !

नारद - कुण्डलिनी शक्ति ? ओह! अर्थात चक्रों का ज्ञान और माता कुण्डलिनी को जागृत करने का ज्ञान?

श्री राधा - हाँ वही ज्ञान - तुम्हारी बातों से तो ऐसा प्रतीत होता है की इस ज्ञान के अलावा कोई अन्य ज्ञान भी है जिसके माध्यम से परमात्मा को प्राप्त किया जा सके !?

नारद - अब क्या बताऊ माते ! पृत्वी लोक में जितने सारे मनुष्य है उतने सारे ही ज्ञान उपलब्ध है ! भला कोई मनुष्य किसे माने और किसे न माने !

श्री कृष्णा - स्वयं आदि शक्ति पृत्वी लोक में जन्म ले चुकी है - और इस गुप्त ज्ञान को अति साधारण और सहज प्रकार से मनुष्यों को दान में दे दिया है - तुम कहना चाहते हो की मानव इस महान कार्य से अभी तक अवगत नहीं हुआ ?

नारद - कुछ लोग तो हुए है प्रभु लेकिन बहुतों को इसके विषय में अधिक जानकारी नहीं है ! आप ही बता दीजिये प्रभु श्री आदि माँ को किस प्रकार प्रसन्न करें ?

श्री राधा - इसी ज्ञान का आशीर्वाद श्री विद्या लक्ष्मी देती है ! किस प्रकार मनुष्यों को अपने चक्रो को स्वच्छ करना चाहिए। किस प्रकार से गरिमापूर्वक बंधन लेना चाहिए। आपस में केवल प्रेम ही हो - घृणा, नफरत जैसी नकारात्मक गुणों का कोई स्थान ही न हो ! जल क्रिया के माध्यम से जान ले की कौन से चक्र में बाधा है और उसे किस प्रकार ठीक किया जाये ! केवल अपने ही बाधाओं या कष्टों को ही दूर नहीं अपितु दूसरों के कष्टों का निवारण करना भी मनुष्य सीख सकता है - यदि पूर्ण रूप से श्री विद्या लक्ष्मी का आशीष उन्हें प्राप्त हो !

नारद - माते कोई सरल उपाए बताइये न - जैसे फूल देना, दिया जलना - किन वस्तुओं से श्री आदि लक्ष्मी प्रस्न्न होंगी ? उन्हें किन वस्तुओं से लगाव है ?

श्री कृष्णा (हस्ते हुए) - लगाव!? हा हा हा ! हे नारद! शृस्टीकर्ता को भला मनुष्य क्या दे सकता है ? उन्ही की बनाई हुई वस्तुओं को वो उन्ही को सौप देगा ?

नारद - परन्तु प्रभु, मनुष्य तो चढ़ावा देते है पुष्प, फल इत्यादि का - इसका क्या कोई अर्थ नहीं !?

श्री कृष्णा - अवश्य है - जब मनुष्य श्री आदि माता को सुन्दर पुष्पों से सुसज्जित करता है तब उसी की स्वाधिस्थान चक्र आशीर्वादित होती है और जब कोई मनुष्य उन्हें सुगन्धित पुष्प चढ़ाता है तो उसकी मूलाधार चक्र स्वच्छ हो जाती है !

नारद - मतलब मनुष्य जो चढ़ावा देता है - वे उसी को आशीर्वादित करती है ?!

श्री कृष्णा - हाँ - ईश्वर को मनुष्य भला क्या दे सकता है !?

नारद - लेकिन प्रभु - देवी देवताओं की आराधना, पूजा, याचना में मनुष्य तो लाखो पुष्प अर्पण करता है - फिर भी तो उनके दुखों का कोई अंत नहीं दिखाए देता ?

श्री राधा - अविद्या से प्राप्त ज्ञान के माध्यम से मनुष्य बहुत से आडम्बर करता है - उनसे उन्हें कोई लाभ नहीं होगा - श्री विद्या लक्ष्मी के आशीष से आत्मसाक्षात्कार का ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात ही पुष्प, फल अर्पण का महत्त्व है अन्यथा नहीं !

श्री कृष्णा - और ज्ञान प्राप्त कर लेने के पश्चात भी यदि गरिमापूर्वक उस ज्ञान का पालन नहीं किया गया - तो भी उसका कोई महत्व नहीं रह जाता ! इस ज्ञान को प्राप्त करने का सौभाग्य भी होना चाहिए !

नारद - जी प्रभु, तो पहेली है श्री आद्यलक्ष्मी जी और दूसरी, श्री विद्यालक्ष्मी जी. फिर -

श्री राधा - ...फिर जो श्री कृष्णा जी ने अभी कहा - तीसरी है श्री सौभाग्य लक्ष्मी।

नारद - ओह अच्छा अच्छा - हाँ हाँ श्री सौभाग्य लक्ष्मी जी - जिन्हे पूजने से धन , अर्थ, ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है - ये तो सभी जानते है !

श्री कृष्णा - सौभाग्य का अर्थ केवल पैसा नहीं है परन्तु पैसे की गरिमा है ! पृत्वी लोक में पैसा तो बहुतों के पास है परन्तु ठीक उसी प्रकार जैसे की किसी गधे के ऊपर धन का लदा होना ! ऐसे व्यक्ति में गरिमा बिलकुल है ही नहीं ! सौभाया मतलब हर चीज़ में खुशकिस्मती - चाहे वो पर्याप्त धन संपत्ति हो, अच्छे जीवन साथी का संग हो एवं कीर्तिमान औलाद का जन्म - सब में ही उत्तम भाग्य के लक्षण ! श्री सौभाग्य लक्ष्मी के आशीर्वाद से केवल उनके भक्त ही नहीं बल्कि उनके भक्तो के संगस्पर्श में आने वाले व्यक्तियों को भी उनका आशीष प्राप्त होता है !

श्री राधा - सौभाग्य लक्ष्मी बहुत गरिमामय होती है| वह लोग जो धन का उपयोग गरिमामय तरीके से करते हैं वह सौभाग्य लक्ष्मी के गुणों का प्रतिनिधित्व होता है|

एक मनुष्य जिसके अंदर सौभाग्यालक्ष्मी जागृत हो जाती है उसमें संतोष, धैर्य ,शांति, सौम्यता , त्याग अदि सकारात्मक गुण स्थापित हो जाते है और वह दयावान और प्रेम से परिपूर्ण स्वभाव का हो जाता है| यह एक ऐसा गरिमा माय गुण है जो घर में सौभाग्य लाता है| सौभाग्य हमारे भविष्य को भी सूखमय बना देता है| यदि हमारे अंदर सौभाग्य लक्ष्मी जी के गुण आ जाते हैं तो वह हमारा और हम से जुड़े सभी लोगों का भविष्य सुंदर बना देती है | अर्थात सौभाग्य लक्ष्मी के गुण से हम अपने आने वाले समय को सुव्यवस्थित कर सकते हैं|

नारद - मतलब जुआ या गुड़दौड़ी के माध्यम से जो धन आता है उसे भी सौभाग्य ही समझे ?

श्री राधा - सौभाग्य अर्थात खुशकिस्मती। श्री सौभाग्य लक्ष्मी आपको धन, जीवन-शैली , भोजन आदि के मामले में सौभाग्य प्रदान करती है और सौभाग्य परमात्मा के माध्यम से ही आता है। केवल परमात्मा ही सौभाग्य प्रदान करते है। जुआ या गुड़दौड़ी के माध्यम से जो धन आता है उसे बदक़िस्मती कहते है जो शीग्र अति शीग्र ही समाप्त हो जाता है या मनुष्य को चंडूखाने पंहुचा देता है जहाँ से उसका पतन शुरू हो जाता है ।

नारद - नारायण नारायण ! बदकिस्मती सीधा पतन की ओर ले जाती है! अच्छा प्रभु , क्या मनुष्य ईश्वर की आराधना या योग के माध्यम से अपने भाग्य को बदल सकता है ?

श्री कृष्णा - आदि शक्ति अवतरण के सिखाये हुए सहज योग के माध्यम से मनुष्य अपने भाग्य को सौभाग्य में बदल सकते हैं| जो मनुष्य सहज योग ध्यान करते है उन्हें सहजी कहा जाता है। सहजी अपने जीवन में सौभाग्य को ला सकते हैं| अगर सहजी नियमित समय पर ध्यान और जल क्रिया करें तो सहजियों को सौभाग्य प्राप्त हो सकती है| क्योंकि जब सहजी ध्यान करते हैं तो उन्हें चैतन्य की प्राप्ति होती है| यही चैतन्य उन्हें सही और गलत में फर्क करना सिखाती है| अगर सहजी अपना कार्य चैतन्य के माध्यम से करें तो वह कार्य अवश्य सफल होता है| और यह चैतन्य मनुष्यों को परमात्मा के माध्यम से प्राप्त होती है| परमात्मा ही मनुष्यों को सौभाग्य प्रदान करते हैं| तो इसलिए सहज ध्यान हमेशा करना चाहिए - सुबह और शाम|

श्री राधा - सहयोगियों को श्री आदि लक्ष्मी जी ने इतनी शक्ति दी है कि उनसे जुड़े लोग और उनके आसपास में रहने वाले लोगों को भी सौभाग्य प्राप्त हो जाता है| क्योंकि सहजी जहां पर भी रहते हैं वहां पर चैतन्य बह रही होती है| जैसे कि अगर सहजी अपने घर में धूनी करते हैं तो उसका धुआ उनके आस पास के पड़ोस में भी पहुंचता है जिससे कि पड़ोसियों का भी कुछ अच्छा हो जाता है|

नारद - अच्छा माते, श्री सौभाग्य लक्ष्मी के बाद ?

श्री राधा - हाँ , श्री सौभाग्य लक्ष्मी के बाद चौथी है **श्री अमृतलक्ष्मी** ! श्री अमृतलक्ष्मी मनुष्य को अनंत जीवन प्रदान करती है। अमृत - मतलब जिसके पान करने से भक्त अजर, अमर हो जाता है अर्थात चिरंजीवी हो जाता है !

श्री कृष्णा - अमृत अर्थात जिसकी मृत्यु न हो ! ऐसा कौन सा धन है जिसकी मृत्यु नहीं होती ? आत्मा की । अतः आत्मा की कृपा अमृतलक्ष्मी है - बाकि सब चीज़ो की मृत्यु हो जाती है। आत्मा के माध्यम से, आत्मा को प्रसन्न करने के लिए किया गया कार्य अमृतलक्ष्मी है।

नारद - उदहारण प्रभु ?

श्री कृष्णा - उदहारण के रूप में अन्य लोगो से प्रेम करना - प्रेम का अर्थात देना - निरवाज्य कार्य करना और आनंद लेना। चैतन्य देना सर्वोत्तम है ! ये अमृत है। चैतन्य का अंत नहीं होता। यही श्री अमृत लक्ष्मी है !

श्री राधा - अमृत लक्ष्मी मनुष्यों को आत्मा की ओर ले जाती है - उन्हें आत्मा स्वरूपी बनाती है। आत्मा का जो मूल गुण है - जो कि आनंद है, यह श्रीअमृत लक्ष्मी के आशीर्वाद से मनुष्यों प्राप्त होता है। मनुष्य अक्सर अपने जीवन में व्यस्त हो जाते हैं और वह आत्मा से दूर हो जा ते हैं लेकिन अमृत लक्ष्मी ही वह शक्ति है जो मनुष्यों को वापस आत्मा की ओर खींचती है. मनुष्यों को निस्वार्थ प्रेम करना सिखलाती है !

नारद - निस्वार्थ प्रेम !? क्या मनुष्य ऐसा प्रेम कर सकता है प्रभु !? ये सब तो उनके पुस्तकों में ही लिखा हुआ होता है - वास्तव में प्रेम कैसे निस्वार्थ होगा ?

श्री कृष्णा - क्यों नहीं हो सकता ? अवश्य होता है - पृत्वी लोक में बहुत से मनुष्य है जिन्हे निस्वार्थ प्रेम का आशीर्वाद श्री अमृत लक्ष्मी से प्राप्त हुआ है ! सहज योगी जब किसीको को आत्मसाक्षात्कार देते है तो वह केवल परमत्मा के आनद को लोगों में निस्वार्थ भाव से बाटने का काम करते है। उन्हें जो परम निरानंद की प्राप्ति हुइ है - उसी को वह चहु ओर फैलाते है ! इसमें कोई बनावटी प्रेम तो नहीं - केवल अमृत प्रेम का ही प्रवाह है !

श्री राधा - एक अन्य उदाहरण हम चैतन्य का भी दे सकते हैं जो मनुष्यों को आत्म साक्षात्कार के बाद प्राप्त होती है। चैतन्य अमृत लक्ष्मी का वास्तविक वरदान है जो आत्म साक्षात्कार के बाद सहज योगियों को मिलता है| यह एक ऐसा वरदान है जो किसी मरते हुए में भी जीवन डाल सकता है! जब भी किसी सहयोगी को कोई समस्या होती है तो विश्व का कोई भी सहयोगी किसी भी सहयोगी को घर बैठे चैतन्य का या अमृत का दान दे सकता है जिससे उसकी समस्या का समाधान आसानी से हो जाता है। चैतन्य का या अमृत का सदुपयोग मनुष्य पौधों, पशुओं , पक्षियों या किसी भी जीवंत चीज में दे सकते हैं - श्री अमृत लक्ष्मी का यह आशीष , यह चैतन्य - सभी जीवंत चीजों पर अमृत की तरह कार्य करता है !

नारद - और पांचवी ?

श्री राधा - श्री गृहलक्ष्मी - जो होती है परिवार की देवी !

नारद - अच्छा - यानि विवाह के पश्चात ग्रहणीय गृहलक्ष्मी के रूप में विराजमान होती है ?

श्री कृष्णा - अरे नहीं नहीं - ज़रूरी नहीं की सभी गृहणियां श्री गृहलक्ष्मी से आशीर्वादित हों ! अब यदि गृहवधू एक भयानक महिला हो तो वो तो परिवार में कोलाहल मचा देगी ! ऐसी गृहवधुओं को कल्हड़ियाँ कह सकते है परन्तु गृहलक्ष्मी कतहि नहीं ! न ही ऐसी महिलाओं को श्री गृहलक्ष्मी का आशीर्वाद प्राप्त होता है !

नारद - तो यदि श्री गृहलक्ष्मी का आशीष प्राप्त न हो तो क्या होता है?

श्री राधा - तो घर घर नहीं केवल मकान बनकर रह जाता है जहाँ कोई सुख, शांति या सुकून का नामोनिशान नहीं रहता !

नारद - फिर तो श्री गृहलक्ष्मी जी का आशीर्वाद बहुत ही अनिवार्य है - मनुष्य घर लौटे और उसे कोई सुख या शांति का अहसास न हो - फिर तो वो नरक जैसे जीवन बिताने समान हो जायेगा !

श्री कृष्णा - बिलकुल हो जायेगा - श्री गृहलक्ष्मी के आशीर्वाद के आभाव से ही तो पृत्वी लोक में कोलाहल मचा हुआ है ! बहार कोलू की बैल के तरह संघर्ष करो और घर आने पर जीवन संगिनी प्रलय का निर्माण करती हुए मिले - ऐसे में जीवन पाताल लोक से भी निम्न श्रेणी का हो जाता है !

श्री राधा - गृहलक्ष्मी होती है प्रेम, धैर्य और माधुर्य का प्रतीक ! यदि वाणी में माधुर्य न हो तो मनुष्य के आधे से अधिक कार्य अटक ही जाते है परन्तु वही कार्य सरलता से हो जाता है यदि वाणी में माधुर्य है और प्रेम से कार्य को कार्यांवित करने की सलाह दी जाये ! परन्तु वाणी में माधुर्य तथा व्यक्तित्व में प्रेम और धैर्य का होना अकस्मात नहीं होता - यह कार्य गृहलक्ष्मी का ही है जो बालपन से ही ऐसे गुणों का निर्माण अपने बच्चो में करती है ! यही करने की क्षमता श्री गृहलक्ष्मी के आशीर्वाद से एक गृहणी को प्राप्त होता है !

नारद - अच्छा - और श्री गृहलक्ष्मी के बाद की शक्ति कौन है ?

श्री राधा - श्री राज्यलक्ष्मी जी! इनके आशीष से साधारण से मनुष्य को भी राजाओं सी गरिमा प्राप्त हो जाती है ! ऐसे लोगो केआचरण में राजा महाराजाओं का प्रताप छलकता है। राजा की गरिमा और उनका प्रताप श्री राजलक्ष्मी जी के वरदान से ही प्राप्त होता है ! इनके आशीर्वाद से भक्त अत्यंत भव्यतापूर्वक लोगो से व्यव्हार करता है मानो किसी रजवाड़े का राजा अपने प्रजा से बात कर रहा हो ! इन्ही के आशीष से मनुष्य अपने परिवार एवं अर्थव्यवस्था की चिंता से मुक्त हो जाता है और उसे पर्याप्त मात्रा में सब कुछ प्राप्त हो जाता है!

नारद - पर्याप्त मात्रा कितनी होती है - यही तो मनुष्य को पता नहीं प्रभु !

श्री राधा - श्री गृहलक्ष्मी और श्री राजलक्ष्मी के आशीर्वाद से मनुष्य को संतुष्टि मिलती है जिससे उसे जो भी मिले उसी में वह संतुष्ट हो जाता है !

नारद - तो फिर और क्या चाहिए माते - संतुष्टि जब मिल जाये!?

श्री कृष्णा - बस ? अपने जीवन में आर्थिक सुविधा प्राप्त हो जाने पर मनुष्य संतुष्ट हो जाता है? ऐसा लगता है तुम्हे?

नारद - संतोष पा लेने के बाद मनुष्य और क्या चाह सकता है प्रभु ?

श्री राधा - संतोष के पूर्ति पर मनुष्य सत्य की खोज आरम्भ करता है और श्री सत्यलक्ष्मी जी के माधयम से मनुष्य को सत्य की चेतना प्राप्त होती है !

नारद - परन्तु माते , सत्य या सच्चाई तो बहुत ही कड़वी होती है - इससे मनुष्य दूर ही भागते है !

श्री राधा - हाँ कड़वी होती है - परन्तु श्री सत्यलक्ष्मी के वरदान से मनुष्य इसी सत्य को एक भव्य रूप से प्रस्तुत कर सकते है ! बिना किसी को चोट पहुचाये इस कटु सत्य को प्रस्तुत करने का आशीष श्री सत्य लक्ष्मी ही प्रदान करती है।

श्री कृष्णा - हर चीज़ में आनंद उठा लेने की शक्ति ही श्री सत्य लक्ष्मी जी का महानतम आशीर्वाद है ! पृथ्वी लोक में तो ऐसी परिस्थिति है की छड़ी लेके गुदगुदाने से भी लोगो को आनंद का अहसास प्राप्त नहीं होता ! इतने अहंकार ग्रसित हो गए है मनुष्य की कुदरत का आनंद ही उठाना भूल गए ! या यूँ कहो की श्री सत्यलक्ष्मी के आशीर्वाद से वंचित रह गए है !

नारद - मनुष्य को कैसे पता चलेगा की उन्हें श्री सत्यलक्ष्मी की प्राप्ति हुई है ?

श्री राधा - श्री सत्य लक्ष्मी आपको चेतना प्रदान करती है। मनुष्य जब अपनी चेतना में उठता है तब उसे सत्य का ज्ञान होता है। वह अपनी खोज में निकल पड़ता है। जब मनुष्य जान लेता है की वह केवल परमात्मा का एक माध्यम है और परमात्मा को पाने में जुट जाता है इसका अर्थ यह होता है की उसे श्री सत्यलक्ष्मी के प्राप्ति हो चुकी है !

नारद - और कौन से रूप है श्री लक्ष्मी जी के?

श्री राधा - श्री भोग्य लक्ष्मी - अर्थात जिनके माध्यम से मनुष्य आनंद का उपभोग करते है। वास्तव में ऐसा है की आनंद का पूरा सागर मनुष्य के चहुँ ओर है परन्तु नाँव की तरह से मनुष्य इसका आनंद नहीं उठा सकता! केवल श्री भोग्य लक्ष्मी जी की कृपा से ही मनुष्य इस सागर का आनंद ले सकता है !

नारद - परन्तु ऐसा क्यों प्रभु?

श्री कृष्णा - क्युकी मनुष्य विचारों में फंसा रहता है ! विचारों में फंसे रहे के कारन मनुष्य किसी भी चीज़ का आनंद नहीं ले सकता ! जब विचार नहीं होते तभी आत्मा प्रवाहित होती है और मनुष्य निर्विचारिता का पूर्ण आनंद उठत सकता है ! वास्तव में परमात्मा ही भोगता है ! इसी ज्ञान को प्रदान करती है श्री भोग्य लक्ष्मी।

नारद - श्री भोग्य लक्ष्मी तत्व को मनुष्य कैसे जागृख कर सकता है प्रभु ?

श्री राधा - आत्म निरीक्षण के माध्यम से - जिससे मनुष्य अपने अंदर की कमियों को दूर कर सकते हैं | आत्मनिरीक्षण के माध्यम से मनुष्य खुद से सवाल पूछते हैं - जैसे क्या वह रोज ध्यान करते हैं ? क्या अभी भी उन्हें ध्यान के वक्त विचार आते हैं आदि| मनुष्य को इस तरह के सभी प्रश्नों को समझना चाहिए और फिर इसकी सफाई करनी चाहिए| जब तक मनुष्य अंदर से संतुष्ट नहीं होंगे तब तक उनके अंदर भोग्य लक्ष्मी तत्व जागृत नहीं हो सकता|

नारद - अब एक और श्री लक्ष्मी जी का रूप बाकि है - वह कौन है ?

श्री कृष्णा - श्री योग लक्ष्मी। योगलक्ष्मी का अर्थ वह शक्ति है जो आपको उस कृपा तक पहुँचती है जिससे आप योग तक पहुंचते है। जिस परम संतुष्टि की खोज मनुष्य कर रहे होते है उसकी अभिवयक्ति मनुष्य में श्री योगलक्ष्मी की शक्ति से होती है।

श्री योग लक्ष्मी जी के आर्शीवाद से आप स्थिरता प्राप्त करे है , आपको योग की प्राप्ति होती है जिस शक्ति से आप स्वयं को एवं दुसरो को भी योग की शक्ति प्रदान कर सकते है। आपके हर कार्य अत्यंत भद्र गरिमामय एवं भव्य तरीके से होते है !

श्री राधा - योग लक्ष्मी की कृपा से मनुष्यों को संतो जैसी गरिमा प्राप्त हो जाती है| जिस व्यक्ति को योगलक्ष्मी की गरिमा प्राप्त हो जाती है वह झगड़ते नहीं है| पर अगर व्यक्ति झगड़ ता है मतलब अभी उसमें श्री योग लक्ष्मी की कृपा का अभाव है| जो शक्ति मनुष्य को योग प्रदान करती है वह शक्ति उन्ही के अंदर है| जब व्यक्ति अपनी योग शक्ति का उपयोग करता है तब वह जानवरो की तरह से व्यवहार नहीं करता| बिल्कुल भद्रा, भव्य एवं गरिमा पूर्वक सब कार्य करता है|

नारद - धयवाद प्रभु जो आपने मुझे अष्ट लक्ष्मी के रूपों के बारे में विस्तार से जानकारी दी. ये बातें मैं पृत्वी लोक तक पंहुचा देता हूँ !

श्री राधा - एक बात लेकिन याद रहे - तुम तो जानते ही हो की लक्ष्मी जी के इर्द गिर्द भवसागर है और जहाँ भी नकारात्मकता होती है लक्ष्मी जी वहां नहीं रहती ! नारकत्मक्ता उन्हें बिकुल पसंद नहीं ! आपने तो सुना ही होगा पृत्वी में जन्मे बड़े बड़े संत साधुओं ने यह साफ़ कह दिया है की मद्यपान करनेवाले लोगो की लक्ष्मी तत्त्व तीसरी पीढ़ी तक बिलकुल समाप्त हो जाती है !

श्री कृष्णा - और हाँ , श्री लक्ष्मी जी धर्मान्धता के मामले में बहुत ही संवेदनशील है ! जिस क्षेत्र में धर्मान्धता होगी वह वहां से चली जाएँगी और उनके चले जाने पर गरीबी और लाचारी फ़ैल जाएगी !

नारद - (श्री राधा कृष्णा को प्रणाम करते हुए) जी प्रभु, आपको कोटि प्रणाम ! मैं अभी पृत्वी लोक पर ये सन्देश फैला देता हूँ - इसी ज्ञान से शायद पृत्वी लोक पर फिर से खुशाली आ जाये !

Extracted from following :

NOTES: there are 9 lakshmi roops that has been discussed in the drama – as enlisted below:

1. **Adhya Lakshmi**
2. **Vidya lakshmi**
3. **Saubhagya Lakshmi**
4. **Amrit lakshmi**
5. **Griha lakshmi**
6. **Rajyalakshmi or Rajlakshmi**
7. **Satya Lakshmi**
8. **Bhogya lakshmi**
9. **Yog Lakshmi**

PS- Shri Adhya Lakshmi is the same as Shri Mahalakshmi . the last 3 stanzas on mahalakshmi can be fitted later – first rehearsh the given drama – see how much time it is taking. Then if required we can add Maha lakshmi – to keep it light weight, we need to be brief.....are non-sahajees also attending the event?

Names of Shri Laxmi : Mahalakshmi has eight aspects

" … First, Adya Lakshmi Adya Lakshmi means Mahalakshmi. Second, Vidya Lakshmi Vidya is the art of Sahaja Yoga, which you know. That is vidya, the rest is all avidya. How to raise the Kundalini, how to awaken all the Deities, how to cleanse yourself, how to cleanse others, all the knowledge, all the sides about that is called as Vidya, the Lakshmi one. Lakshmi is the grace, awareness that is gracious.

Sobhagya Lakshmi Sobhagya means good fortune. The Lakshmi that gives you fortune in everything, like she gives you good fortune in money, in your

living, in your food, in any way. Any good fortune is given through God, it's only God who gives good fortune.

Amruta Lakshmi Amruta means the thing that does not die. In this world Lakshmi exists as your wealth. Now the wealth that does not die, which is that thing? Is the Spirit. So the grace of the Spirit is the Amruta Lakshmi. … the rest of the things will die out, and whatever is done through the Spirit, to please the Spirit, is the Amruta Lakshmi. For example, loving others …. loving means giving without any expectations, just giving and enjoying. The greatest is to give vibrations. Vibrations cannot die.

Gruha Lakshmi and Raj Lakshmi You know that.

Satya Lakshmi I told you – awareness. She is the one who has given you awareness. Awareness is Lakshmi's character. Satya, which means the truth. As you rise in your awareness you know the truth … What is the truth? What you are aware of? You are aware that you are the instrument of God and that He is working through you. You are aware of that because is flowing on your central nervous system. This is the truth for which you have to be aware. What is the other truth? Is, who are you? That you are the Spirit, and the third truth is, who am I? And so speaking, who is God, what is your destiny? If they become your awareness, then you have got Satya Lakshmi.

Bhogya Lakshmi Bhog means the one by which you enjoy …. 1 mean, is like the whole ocean of joy is around you and you are like a bird who cannot drink it. Only through the grace of Bhogya Lakshmi you can enjoy.

Yoga Lakshmi The Lakshmi's power which gives you yoga.

Lakshmi supports your power of yoga by giving you awareness …. so Yoga Lakshmi is the power by which you go to yoga …. and then once you have achieved your yoga you get the grace. Lakshmi is the grace. So you get the grace of a saint.

She's not sitting there to show off

" … Now how people misuse the scriptures also one should see. That Raja Lakshmi is sitting on the elephant alright, so they should have all very big cars, you see. She is sitting on the elephant because elephant is the highest animal, is very kind, very forgiving and has such a tremendous memory. That's why She's sitting on an elephant. She's not sitting there to show off,

but She's sitting there to see around, what is happening. Avalokan – She can see around what is happening, to be at a higher place. That's why a king is made to sit on a higher pedestal. But the purpose is not to show off. But the purpose is that from that state he can see others better, he can be watchful of others … "

1994 SHRI RAJA LAKSHMI PUJA, NEW DELHI

She's the one who looks after your food, looks after your comfort, she protects you, she nourishes you, she gives you joy

"…So today's day is, as I told you, the thirteenth day is the Goddess, Dhanteras it is called – is the day of the Gruha Lakshmi. She came as Gruha Lakshmi. In the household, the lady is the one who is the symbol of that Lakshmi, to begin with. Because she's the one who looks after your food, looks after your comfort, she protects you, she nourishes you, she gives you joy. And the women who cannot do that are not Gruha Lakshmis, they are not the – housewife is a very poor word for that. They are the Gruha Lakshmis means they are the goddesses of the family … "

1982 DIWALI PUJA, LONDON

https://www.amruta.org/men-and-women-sy/role-models-of-great-women/?highlight=ashtha%20lakshmi

sent by sahaja yuva shakti ::

1. Shri Adya Lakshmi

अध्य अर्थात आदि लक्ष्मी| इनका जन्म सागर से हुआ| जीवन का प्रारंभ ही जल में ही हुआ| फिर जीवन पृथ्वी पर आई| जीवन यानी चेतना आना अन्यथा सब निर्जीव है|

जीवन एक नारी ही जन्म देती है और उसकी चेतना को एक मर्यादा आदर्श उसके जीवन के स्वभाव में स्थापित करती है| बच्चों की देखरेख लालन पालन करती है| अपनी सारी अच्छी बातें बच्चों को बताने का प्रयास करती है| किंतु इस क्रिया करते समय कुछ बातें अनजाने में कर जाती है| बच्चों को सुबह से जल्दी उठो बस छूट जाएगी और कई बातों से उन्हें हर बड़ी का स्वाभाव डाल देती है| क्या हम बच्चों को ध्यान के लिए एक वातावरण बना पाते हैं| बच्चों को क्या शहद का ज्ञान हम दे पाते हैं मतलब प्रैक्टिकल कंसेप्ट|

अंदर की शांति मां के प्रति श्रद्धा सहज तरीका जीवन में अपनाना| वाइब्रेशन चक्रों की पकड़ चित्र द्वारा कार्य करना देश भक्ति सामूहिक ता का आनंद||

समुद्र का गुण है कि वह सभी बाधाओं को अपने में समा लेता है उसी प्रकार जब आदिलक्ष्मी का तत्व मनुष्य में जागृत होता है तब वह अपने आसपास के लोगों की एवं वातावरण समस्याओं को स्वयं में समा लेता है|

की आधे यानी प्रारंभ हमारे गुणों का प्रारंभ जिसकी शुरुआत बालपन से होती है यही मनुष्य के अंदर धर्म की नींव है| अबोध इता के अभ्यास से मनुष्य पवित्रता में स्थापित होता है| बाल पर नवोदिता का प्रारंभ है| इसलिए किसी भी शिशु के पालन पोषण में अत्यंत प्रेम करुणा धैर्य का होना आवश्यक है| यदि जड़ों में इन गुणों का अभाव हो तो अब उदिता शिशु में पूर्णता स्थापित नहीं होती|

जैसे मां ने बताया कि बालपन से ही यदि शिशु को स्वच्छता सिखाई जाए जैसे दिन में 8 से 10 बार हाथ धोने चाहिए खाना वाइब्रेट किए बिना ना खाए उन्हें ज्यादा खिलौनों के साथ लव बल्कि अपने साथ वक्त बिताने लगाएं

2. Shri Vidya Lakshmi

विद्यालक्ष्मी या लक्ष्मी जी का दूसरा स्वरूप है विद्या सहजयोग की कला है जिसे आप जानते हैं यह आपको परमेश्वरी शक्ति को संभालने की कला सिखाती है वह आपको सिखाती है कि मां ने हमें जो शक्ति प्रदान की है किस प्रकार उसका उपयोग करें जैसे हम बंधन लेते हैं कई लोगों को पता नहीं होता है कि बंधन के सरा ले जल्दी-जल्दी में ले लेते हैं बिना

उस बंधन की शक्ति को जाने या कोई भी कार्य हम कई बार जल्दी-जल्दी जैसे तैसे बस खत्म करना है वैसे करते हैं हम कोई भी कार्य करते हैं हमें उसका पूर्ण ज्ञान होना चाहिए एवं खुश कार्य को अत्यंत सम्मान पूर्वक एवं गरिमा पूर्वक करना चाहिए जैसे हम श्री माताजी को जब पुष्प अर्पित करते हैं तो ऐसा नहीं कि बस जा कर रख दिया हम परमेश्वरी को पुष्प अर्पित कर रहे हैं जिसका बड़ा महत्व है श्री माताजी ने यहां बताया है कि जब हम श्री माता जी के श्री चरणों में पुष्प अर्पित करते हैं तो भी वह खुद के लिए करते हैं श्री माताजी तो खुद ही प्रकृति है उन्हें इसकी क्या जरूरत है या हम खुद के लिए करते हैं कि श्री माताजी कृपा कर हमारा जीवन भी इस पुष्प की तरह सुंदर एवं सुगंधित बना दीजिए साथ ही साथ हमारे चक्र पर भी इसका बड़ा महत्व है श्री माताजी ने बताया है कि हम जब मां को फूल अर्पित करते हैं तो वह हमें दो चीज प्रदान करती हैं अगर पुष्प सुंदर रंग का है तो वह हमारे स्वाधिष्ठान चक्र को ठीक करती है और अगर पुष्प सुगंधित है तो वह हमारे मूलाधार चक्र को ठीक करती है हमें सभी कार्य एवं शक्तियों का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए डिसिप्लिन एट होम अनुशासन हमारे जीवन में बहुत महत्व रखता है जैसे कि जब हम सेंटर जाते हैं तो हमें गरिमा में पोशाक पहने चाहिए हमारा शरीर मां का मंदिर है हमें इसे हमेशा ढका हुआ रखना चाहिए लेकिन अब देखने वाली बात यह है कि जब हम सेंटर पर होते हैं या पूजा में होते हैं तभी हम गरिमा में पोशाक पहनते हैं या जब हम घर पर होते हैं या अपने काम से बाहर निकलते हैं तब भी अपनी गरिमा को बनाए रखते हैं हमने अपने पहनावे पर विशेष ध्यान रखना चाहिए जिस प्रकार का रहन सहन घर के बड़ों का होता है वही रहन-सहन बच्चे सीखते हैं हमें या ध्यान रखना चाहिए कि हम से बच्चे तू विद्या सीख रहे हैं या कू विद्या सीख रहे हैं हमें घर पर गरिमा पूर्ण व्यवहार करना चाहिए घर के बड़ों को या ध्यान रखना चाहिए कि वह बच्चों को गरिमा पूर्ण माहौल प्रदान कर रहे हैं हमारे से है जिओ की शुरुआत हमारे घर से होती है इसका तात्पर्य है कि हम घर के बाहर जितना प्रेम चलाते हैं उतना ही प्रेम हमें अपने घर वालों को देना चाहिए चाहे घर वाले शहद में हो या ना हो

पर हमारा व्यवहार उनके साथ प्रेम भरा होना चाहिए अब चक्रों की पकड़ हमारे लिए सहज योग धर्म मात्र नहीं होना चाहिए हमें सहज योग पर पूरी रिसर्च करनी चाहिए हमें चक्रों का पूर्ण ज्ञान होना हमारे किस चक्र में पकड़ है और उसे किस तरह ठीक कर सकते हैं हमें इसका बोध होना चाहिए एवं दूसरों के चक्रों के विषय में भी ज्ञान होना

चाहिए तथा उनके चक्रों को हम किस प्रकार ठीक कर सकते हैं या तकनीक भी हमें मालूम होनी चाहिए अब रेगुलेरिटी एवं एक्सपीरियंस इसके लिए हमें कौन सा ना ध्यान और फूड शोक करना चाहिए ध्यान और

जल क्रिया करने से ही हमें इसका अनुभव होगा कि हमारे किस चक्र पर पकड़ है तो इसके लिए सबसे पहले हमें ध्यान में रेगुलेरिटी लाना आवश्यक है कई बार ऐसा होता है कि हम ध्यान तो करते हैं पर अनुभव प्राप्त नहीं कर पाते तो इसके लिए हमें या देखना आवश्यक है कि हम अनुभव प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं कहीं या किसी चक्र के पकड़ के कारण तो नहीं है हमें या ज्ञान होना चाहिए कि इस अनुभव को किस प्रकार प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि अनुभव के बिना हमारे सहजयोग का कोई अर्थ नहीं रह जाता जैसे कि हमारे बाय स्वाधिष्ठान में कोई पकड़ है तो हो सकता है कि हमारे बाय आपके अंगूठे में दर्द या अलग सा अनुभव हो सकता है इससे आप तीन कैंडल ट्रीटमेंट से ठीक कर सकते हैं या चाहे कैंडलिंग ट्रीटमेंट से ठीक कर सकते हैं और भी बहुत कुछ कर सकते हैं पर महत्वपूर्ण बात यह है कि हमें पता होना चाहिए कि क्या करना है.

3. Shri Saubhagya Lakshmi

भाग्य का अर्थ होता है किस्मत अगर भाग्य का प्रभाव एक बार ना होकर सौ बार हो तो उसे सौभाग्य कहते हैं सौभाग्य अर्थात खुशकिस्मती|

सौभाग्य हमें सौभाग्य लक्ष्मी की कृपा से प्राप्त होती है| वे हमें धन जीवन शैली भोजन आदि के मामले में सौभाग्य प्रदान करती है| सौभाग्य का अर्थ पैसा नहीं है पैसे की गरिमा है| इसका अर्थ खुश किस्मत ही हर चीज में अच्छा भाग्य| सौभाग्य लक्ष्मी बहुत गरिमामय होती है| वह लोग जो धन का उपयोग गरिमामय तरीके से करते हैं वह सौभाग्य लक्ष्मी के गुणों का प्रतिनिधित्व होता है|

एक सहयोगी जिसके अंदर सौभाग्यालक्ष्मी जागृत हो जाती है उसमें संतोष धैर्य शांति सौम्यता त्याग वन दयावान और प्रेम से परिपूर्ण स्वभाव का हो जाता है| यह एक ऐसा गरिमा माय गुण है जो घर में सौभाग्य लाता है| सौभाग्य हमारे भविष्य को भी सुख में बना देता है| यदि हमारे अंदर सौभाग्य लक्ष्मी जी के गुण आ जाते हैं तो वह हमारा और हम से जुड़े सभी लोगों का भविष्य सुंदर बना देती है | अर्थ ता सौभाग्य लक्ष्मी के गुण से हम अपने आने वाले समय को सुव्यवस्थित कर सकते हैं| सौभाग्य हमें परमात्मा के माध्यम से मिलती है| केवल परमात्मा ही सौभाग्य प्रदान करते हैं| घुड़दौड़ के माध्यम से यदि हमारे पास धन आ जाता है तो वह बदकिस्मती है| या धन या तो अगले दिन समाप्त हो जाएगा या हम चंदू खाने पहुंच जाएंगे| पैसा बहुत से लोगों के पास है परंतु यह पैसा वैसा ही है जैसे गधे के ऊपर धन का ल दा होना| ऐसे व्यक्ति में गरिमा बिल्कुल नहीं दिखाई देती| सौभाग्य का अर्थ केवल पैसा ही नहीं है| परमात्मा के माध्यम से प्राप्त होने वाला आशीर्वाद का अत्यंत गरिमा पूर्वक उपयोग करना चाहिए ताकि हम ताकि हम भी आशिर्वा दित हो और हम से मिलने वाले लोगों को भी सौभाग्य का वह आशीष प्राप्त हो|

हम सहज योग के माध्यम से कैसे अपने भाग्य को सौभाग्य में बदल सकते हैं| क्या हम सहजी अपने जीवन में सौभाग्य को ला सकते हैं| अगर हम नियमित समय पर ध्यान और जल क्रिया करें तो हमें सौभाग्य प्राप्त हो सकती है| क्योंकि जब हम ध्यान करते हैं तो हमें चैतन्य प्राप्त होती है| वही चेतन ने हमें सही और गलत में फर्क करना सिखाती है| अगर हम अपना कार्य चैतन्य के माध्यम से करें तो वह कार्य अवश्य सफल होता है| और यह चैतन्या हमें परमात्मा के माध्यम से प्राप्त होती है| परमात्मा ही हमें सौभाग्य प्रदान करते हैं| तो इसलिए हमें हमेशा ध्यान करना चाहिए सुबह और शाम|

हम सहयोगियों को श्री माताजी ने इतनी शक्ति दी है कि हम से जुड़े लोग और हमारे आसपास में रहने वाले लोगों को भी सौभाग्य प्राप्त हो जाती है| क्योंकि हम सहजी जहां पर भी रहते हैं वहां पर चैतन्य बह रही होती है| जैसे कि अगर हम अपने घर में धू नी करते हैं तो इसका धुआ हमारे आस पास के पड़ोस में भी पहुंचता है जिससे कि उनके भी कुछ अच्छा हो जाता है| जैसे उदाहरण के रूप में अगर हम सहज योगी किसी से बात करते हैं तो कई बार हमें यह सुनने को मिलता है की बहन तुमसे बात करके बहुत अच्छा लगा और शांति महसूस हुआ या फिर कई बार ऐसा होता है कि हमसे बात करते करते उन लोगों का जो अटका होता है वह भी पूरा हो जाता है| जब हम यह बात सुनते हैं तो हम इस बात की जनता को समझ नहीं पाते वास्तव में जबकि वह हम सहज योगियों के सौभाग्य को अपनी चेतना पर महसूस करते हैं| हमारा चैतन्य उन्हें भी प्राप्त हो जाता है जिससे कि उनका अटका हुआ काम पूरा हो जाता है हमारा सौभाग्य अगले अगले के भाग्य को खोल देता है जिस वजह से कुछ लोग सहज योग और आकर्षित होते हैं| हमें सभी को प्रेम देना चाहिए| हमारा प्रेम सभी के लिए होना चाहिए किसी एक व्यक्ति के लिए नहीं होना चाहिए| जैसे कि हमें सिर्फ अपने बच्चों से प्रेम नहीं होना चाहि��

4. Shri Amrit Lakshmi

अमृत का अर्थ है अमृत जिसे लेने के बाद मृत्यु नहीं होती अर्थात चिरंजीवी होना अमृत लक्ष्मी आपको अनंत जीवन प्रदान करते हैं श्री अमृत लक्ष्मी हमें आत्मा स्वरुप बनाती है आत्मा के गुणों से मिलाती है अमृत अर्थात जिसकी मृत्यु ना हो संसार में लक्ष्मी आपके वैभव रूप में रहती है ऐसा कौन सा धन है जिसकी मृत्यु नहीं होती यह आत्मा है अतः आत्मा की कृपा अमृत लक्ष्मी है आत्मा की कृपा ही अमित लक्ष्मी है बाकी सब चीजों की मृत्यु हो जाती है आत्मा के माध्यम से आत्मा को प्रसन्न करने के लिए किया गया कार्य अमृत लक्ष्मी है उदाहरण के रूप में अन्य लोगों से प्रेम करना इसका प्रतीकात्मक अर्थ है आप समझते हैं प्रेम करना अर्थात देना अनिवार्य कार्य करना और आनंद लेना चैतन्य देना सर्वोत्तम है यह अमृत है चैतन्य का अंत नहीं होता यही अमृत लक्ष्मी है

अमृत लक्ष्मी हमें आत्मा की ओर भर आती है हमें आत्मा स्वरुप बनाती है आत्मा का जो मूल गुण है जो कि आनंद है या अमृत लक्ष्मी के आशीर्वाद से हमें प्राप्त होता है हम अपने जीवन में व्यस्त हो जाते हैं और हम आत्मा से दूर हो जाते हैं लेकिन अमृत लक्ष्मी ही वह शक्ति है जो हमें वापस आत्मा की ओर खींचती है अध्यात्म की शक्ति हमें आत्मा का आनंद प्रदान करती है ऐसा सभी कार्य जो हमें परमेश्वरी आनंद से जोड़ता है आत्मा का आनंद है जैसे सहज योग में एक दूसरे के साथ हमारा निर्वाचित प्रेम निर्बाध प्रेम को हम कई उदाहरण से समझ सकते हैं जैसे आत्म साक्षात्कार एक बहुत बड़ा उदाहरण है जब हम किसी को सहज योग बताते हैं और उसे आत्मसाक्षात्कार मिलता है उस समय हमारे अंदर निस्वार्थ भावना होती है उस वक्त हमारे अंदर सिर्फ यही भावना होती है जो आत्मा का आनंद परमात्मा से हमें प्राप्त हुआ वही आत्मा का आनंद वह भी प्राप्त करें और उसे भी श्री मां का वही प्रेम एवं करना प्राप्त हो जो हमें मिला यहां पर ऐसी कोई भावना हमारे अंदर नहीं होती कि इसके बदले में हमें क्या मिला यह केवल हमें आत्मा का आनंद प्रदान करती है इसका दूसरा बहुत बड़ा उदाहरण है सहज योगियों का आपस में प्रेम सहज योग में सहयोगी हमारे वास्तविक रिश्तेदार होते हैं और आपका यह प्रेम कोई बनावटी नहीं होता बल्कि आत्मा से आत्मा का मजबूत एवं परमेश्वरी संबंध होता है जैसे किसी भी सहयोगी को यदि कोई मुसीबत आती है तो कोई भी अन्य सहयोगी उसकी मदद निस्वार्थ भाव से करता है

मदद करते समय सहयोगी के सीधे में केवल यही भावना होती है कि किसी भी प्रकार से हमारे माध्यम वे उस सहयोगी की समस्या दूर हो जाए और यह कार्य सहयोगी को आत्मा का आनंद प्रदान करता है इसे ही हम निर्वाह प्रेम कहते हैं|

जिसमें कोई ब्याज नहीं होता है केवल आनंद ही होता है यह प्रेम किसी निश्चित क्षेत्र शहर राज या देश का नहीं होता बल्कि पूरे विश्व का होता है यहां बैठे किसी भी सहयोगी को यदि यह पता चले कि दूसरे देश में कोई सजी मुसीबत में है तो वही करना वही प्रेम हमारे जिले में पढ़ती है| और उसकी मदद करने के लिए हम आतुर हो जाते हैं यह भावना भी निस्वार्थ है इसमें भी बदले की आग के बिना केवल आत्मा की आत्मा से संबंध को महत्व देते हैं

एक अन्य उदाहरण हम चैतन्य का भी दे सकते हैं जो हमें आत्म साक्षात्कार के बाद प्राप्त होती है चैतन्य अमृत लक्ष्मी का वास्तविक वरदान है जो आत्म साक्षात्कार के बाद सहज योगियों को मिलता है| यह एक ऐसा वरदान है जो किसी मरते हुए में भी जीवन डाल सकता है जब भी किसी सहयोगी को कोई समस्या होती है तो विश्व का कोई भी सहयोगी किसी भी सहयोगी को घर बैठे चैतन्य का या अमृत दे सकता है जिससे उसकी समस्या का समाधान आसानी से हो जाता है चैतन्य का या अमृत हम से पौधों पशु पक्षी या किसी भी जीवन चीज में दे सकते हैं यह चैतन्य भी जीवंत चीजों पर अमृत की तरह कार्य करता है.

5. Shri Gruh Lakshmi

गृहलक्ष्मी परिवार की देवी है जरूरी नहीं कि सभी गिरी निया गृहलक्ष्मी हो वह कल ही नहीं आ भी हो सकती है ध्यान रख महिलाएं भी हो सकती है परिवार की देवी का निवास यदि आपके अंदर है केवल तभी आप गृहलक्ष्मी आए हैं अन्यथा नहीं| हम सभी को अपने अंदर आत्मनिरीक्षण करना चाहिए कि क्या हम में गृह लक्ष्मी का गुण है गृह लक्ष्मी का सबसे पहला गुण होता है बानी की मान्यता जिस प्रकार श्री माता आत्मसाक्षात्कार देती है तो उसके चित्र में प्रकाश आ जाता है| इसका कारण है कि मां की बानी मां का प्रेम मां का करुणा यह सब कुछ हमारे अंदर बहुत सौम्यता पूर्वक प्रवेश करता है उसी प्रकार एक भी लक्ष्मी का गुण होना चाहिए कि वह अत्यंत माधुरी तरीके से सभी से बातचीत करें| इसकी शुरुआत घर से होती है | घर में सभी के प्रति बहुत ही माधुर्य ता से पेश होना चाहिए एक गृहलक्ष्मी को कभी भी अपना धैर्य नहीं खोना चाहिए धर्य खोने से जो काम आसानी से हो सकता है उसमें भी बाधा आ जाती है हम यदि किसी काम को करने या किसी को समझाने में वाणी की माधुरी अता को प्रस्तुत करें तो काम अत्यंत आसान तरीके से बन जाता है| घर के लोगों में बातों का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है वह अपने घर का वातावरण इस तरह बनाए कि चारों और सहयोग का वातावरण हो जाए|

6. Satya Lakshmi

सत्य लक्ष्मी हमें चेतना प्रदान करती है चेतना लक्ष्मी जी का गुण है अपनी चेतना में जब हम उठते हैं तो हमें सत्य का ज्ञान होता है सत्य क्या है हमें किस चीज की चेतना है हमें इस बात के प्रति चेतना होनी चाहिए हम परमात्मा के माध्यम हैं और वह हमारे माध्यम से कार्य कर रहे हैं इसकी चेतना हमको इसलिए हैं क्योंकि यह हमारे मध्य नाड़ी तंत्र पर प्रवाहित हो रही है इस सत्य के प्रति हमको चेतन होना है दूसरा सत्य क्या है कि हम कौन हैं हम आत्मा हैं तीसरा सत्य यह है कि मैं कौन हूं चौथा सत्य यह है कि परमात्मा कौन है यदि वह हमारी चेतना बन जाते हैं तब समझे हमें सत्य लक्ष्मी प्राप्त हो गई है

सत्य चेतना हमारे अंदर विद्यमान हैं परंतु इस सत्य को हम अत्यंत भव्य तरीके से प्रस्तुत कर सकते हैं सत्य से हमें लोगों को चोट नहीं पहुंचाने फूलों में रखकर लोगों को सत्य देना है यह सत्य लक्ष्मी है

सत्य लक्ष्मी हमारे मस्तिष्क में है मस्तिष्क श्वेता इस प्रकार कार्य करता है कि लोग सोचते हैं कि यह कोई विशिष्ट व्यक्तित्व हैं सहयोगी को हमेशा समझ होती है कि आनंद किस प्रकार उठाना है सहयोगी कभी चिंतित नहीं होता

हमें भी आनंद लेने के योग्य होना चाहिए अगर हम कोई बैठूंगी या हास्यास्पद चीज देखते हैं तो हमको हंसना और आनंद लेना चाहिए यह बहुत कठिन कार्य है कोई यदि अटपटा या भद्दा हो तो उस पर गुस्सा नहीं करना चाहिए उसे आनंदमय बना लेना चाहिए यह महानतम चीज है हर चीज में आनंद उठा लेने की शक्ति ही श्री सत्य लक्ष्मी का महानतम आशीर्वाद है मनुष्य इतने ग्रसित हो गए हैं कि कुदरत का आनंद उठाना ही भूल गए

7. Shri Yog Lakshmi

लक्ष्मी जी की वह शक्ति जो योग प्रदान करती हैं वह योगलक्ष्मी हैं| इन्ही की कृपा से हम योग प्रदान करते हैं| वैभव से संतुष्ट हो पाने पर हम योग प्राप्त करना चाहते हैं| योग प्राप्त हो जाने तक हम असंतुष्ट रहते हैं और योगलक्ष्मी हमको योग प्रदान करती हैं| अतः योगलक्ष्मी का अर्थ वह शक्ति है जो हमें उस कृपा तक पहुंचाती है जिससे हम योग तक पहुंचते हैं| जो संतुष्टि हम खोज रहे होते हैं उसकी अभिव्यक्ति हम में योगलक्ष्मी की शक्ति से होती है|

योग लक्ष्मी की कृपा से हमें संतो जैसी गरिमा प्राप्त हो जाती है| जिस व्यक्ति को योगलक्ष्मी की गरिमा प्राप्त हो जाती है वह झगड़ते नहीं है| पर अगर व्यक्ति झगड़ ता है मतलब अभी उसमें योग लक्ष्मी की कृपा का अभाव है| जो शक्ति हमको योग प्रदान करती है वह शक्ति हमारे अंदर है| जब व्यक्ति अपनी योग शक्ति का उपयोग करता है तब बंदर गधे का घोड़े की तरह से व्यवहार नहीं करता| बिल्कुल गरिमा पूर्वक यह कार्य करता है| अत्यंत भद्र गरिमा में एवं भव्य तरीके से इस कार्य को करता है|

हमारे अंदर यह विवेक होना चाहिए कि हम भिन्न-भिन्न प्रकार के लोगों को आसानी से सहयोग बता सकें| अपनी विवेक शक्ति को बढ़ाने के लिए मां का बताया हुआ एक महत्वपूर्ण उपचार कर सकते हैं| हर सहयोगी को प्रतिदिन नाक में घी कपूर डालना चाहिए इससे हमारी विवेक बुद्धि बहुत ही सुंदर हो जाती है|

इससे हम सा चक्र खुलता है| जी कपूर नहीं डालने से चक्र सूख जाता है|

दूसरी चीज यह है कि लोगों को आजकल फैशन का बड़ा कीड़ा काट गया है| फैशन के नाम पर लोग अपने बालों को कलर करवाने लगे हैं| सहयोगियों को हेयर कलर नहीं करवाना चाहिए इससे आंखों की रोशनी कम होने लगती है| ज्यादा हेयर कलर करने से आंखों की रोशनी पूरी तरह जा सकती है| हेयर कलर करने से चक्रों को नुकसान भी हो सकता है| हमें बालों में तेल लगाना बहुत जरूरी है| नहीं तो हमारे बाल भी बहुत जल्दी झड़ सकते हैं|

हमें सहस्रार पर अच्छे से तेल लगाना चाहिए| शनिवार के दिन बालों में हम अच्छे से तेल लगाकर हाथों से मसाज कर सकते हैं| या फिर एक सहयोगी दूसरे सहयोगी के लिए एक अच्छी मालिश कर सकता है|

Shri Bhogya Lakshmi

भोग्य लक्ष्मी अर्थात जिसके माध्यम से हम आनंद लेते हैं| आत्मा का आनंद ही सत्य आनंद है| वास्तव में ऐसा है की आनंद हमारे चारों ओर हैं पर नाव की तरह हम इस का आनंद नहीं ले पा रहे हैं| जब हम किसी कालीन को देखते हैं तो हमारे मन में सौ तरह के ख्याल आते हैं जैसे इसे किसने बनाया होगा इसे कहां से लिया होगा आदि| परंतु इन सारी चीजों में हम उसकी खूबसूरती को देखना भूल जाते हैं| श्री भोग्य लक्ष्मी तत्व हम सबके अंदर पूरी तरह से जागृत नहीं है जिस वजह से आज भी हम उस आनंद में नहीं है|

आत्म निरीक्षण वह माध्यम है जिससे हम अपने अंदर की कमियों को दूर कर सकते हैं और हम उस आनंद में उतर सकते हैं| आत्मनिरीक्षण के माध्यम से हम खुद से सवाल पूछते हैं| जैसे क्या हम रोज ध्यान करते हैं क्या अभी भी हमें ध्यान के वक्त विचार आते हैं आदि| इस तरह के सभी प्रश्नों को हमें समझना चाहिए और फिर इसकी सफाई करनी चाहिए| जब तक हम अंदर से संतुष्ट नहीं होंगे तब तक हमारे अंदर भोग्य लक्ष्मी तत्व जागृत नहीं हो सकता|

हम सभी सहज योगियों को हर चीज का आनंद लेने आना चाहिए| जैसे पंखा बिना बटन ऑन किए नहीं चल सकता उसी प्रकार आत्मा से जुड़े बिना हमें आनंद नहीं मिल सकता| केवल श्री भोग्य लक्ष्मी की कृपा से हम हर चीजो का आनंद ले सकते हैं जब हम किसी फूल को देखते हैं तो उसका आनंद लेने का क्षेम हमें होना चाहिए| जब हमारे मन में विचार नहीं होते आत्मा प्रवाहित हो रही होती है तब आप आनंद उठा सकते हैं वास्तव में हमें कहना चाहिए की श्री माताजी आप ही भोक्ता है|

Shri mahalakshmi

महालक्ष्मी के तीन सिद्धांत है और चौथा सिद्धांत स्वयं मां है मां का कार्य बहुत ऊंचा और विशाल है इसके लिए गहन धैर्य की आवश्यकता थी| अगर मां ने किसी को त्यागा होता तो यह महान कार्य नहीं हो पाता मां ने खुद का एवं अपने कथित परिवार का त्याग किया मां ने अपनी निद्रा और आराम को भी त्याग दिया मां को यह सारे त्याग करने पड़े ताकि हमारे अंदर महालक्ष्मी सिद्धांत प्रकट हो सके इस सिद्धांत की जड़े हमारे अंदर होनी चाहिए हम अगर सुख-सुविधाओं से आलस्य स्वार्थ आदि से चिपके रहेंगे तो इन सब चीजों के होते हुए भी हम इनका आनंद नहीं ले सकते हैं| केवल अपने आनंद की चिंता करने से बाकी सभी कुछ समाप्त हो जाता है प्रेम की शक्ति हर

चीज पर स्वामित्व प्रदान करती है आपके शरीर मन अहंकार सभी चीजों पर हम यदि किसी से निर्विचार प्रेम करते हैं तो यह प्रेम की शक्ति हम पर आनंद की वर्षा करती है यह आनंद उस व्यक्ति के लिए संभव नहीं है जो शुद्ध प्रेम नहीं करता| परंतु प्रेम बिना त्याग के नहीं आता है| किसी भी कार्य को करने का प्रथम उद्देश्य प्रेम है तब उस कार्य को करने में कोई कठिनाई या परेशानी नहीं होती अगर हमें हमारा संपूर्ण व्यक्तित्व विकसित करना है तो हमें यह जानना चाहिए कि हमारा प्रेम सिर्फ दिखावा के लिए ना हो दिखावटी प्रेम से हमें बचना चाहिए| हमें यह देखना चाहिए कि हमने क्या कार्य किया है हम आनंद में तो आ जाते हैं लेकिन बिना त्याग के संपूर्ण नहीं हो सकता| प्रेम की शक्ति आनंद का स्रोत है लेकिन प्रेम विहीन हृदय को यह आनंद से परिपूर्ण नहीं करती|

कुंडलिनी के उत्थान के लिए महालक्ष्मी शक्ति ने हमारी उत्क्रांति का मध्य मार्ग का सृजन किया महालक्ष्मी की शक्तियों ने हमारे अंदर आवश्यक संतुलन आवश्यक मार्ग का सृजन किया है ताकि कुंडलिनी उठ सके या प्रेम एवं करुणा का मार्ग है करुणा और प्रेम के माध्यम से वे यह मार्ग बनाती है क्योंकि वह जानती है कि यदि मार्ग खुला ना होगा तो कुंडलिनी नहीं उठ सकेगी|

अंततः व्यक्ति उस अवस्था तक पहुंच जाता है जहां जिज्ञासा का आरंभ होता है और हम सब में जब जिज्ञासा जागृत हुई तो हमारे अंदर महालक्ष्मी तत्व जागृत हो गया एक और कार्य जो महालक्ष्मी तत्व करता है की वह यह की कुंडलिनी शक्ति को भीम चक्र तक जाने का मार्ग बताता है ताकि इन चक्रों के दोष दूर हो सके यह अत्यंत लचीली सकती है जो भीम चक्रों में कुंडलिनी का पथ प्रदर्शन करती है और समझती है कि किस चक्र को कुंडलिनी की सहायता की आवश्यकता है आपने अवश्य देखा होगा कि किसी भी बाधित चक्र पर जाकर उसे ठीक करने के लिए यह किस प्रकार धड़कती है यह सारा कार्य इसलिए होता है क्योंकि वह करुणा एवं प्रेम से परिपूर्ण है और चाहती है कि आप पूर्ण सत्य को प्राप्त करें|

पूर्व कर्मों के बहुत से बंधन एवं समस्या हमारे उत्थान में कठिनाई उत्पन्न करते हैं षडयंत्र रिपु हमारा अंतर परिवर्तन असंभव कर देते हैं परंतु महालक्ष्मी तत्व के प्रज्वलित और जागृत हो जाने पर मानव में अंतर परिवर्तन होता है और वह एक भीम तत्व का बन जाता है आत्म तत्व| महालक्ष्मी तत्व जागृत एवं स्थापित होने के पश्चात व्यक्ति बात बात पर परेशान नहीं होता प्रेम एवं करुणा का आनंद उठाता है | साधक को श्रीकृष्ण वर्णित स्थितप्रज्ञ स्थिति प्राप्त हो जाती है और उसमें सामूहिक चेतना का एक नया आयाम विकसित हो जाता है| बूंद समुद्र में मिलकर पूर्ण समुद्र बन जाती है तथा बहुत से दीप प्रज्वलित करती है|

श्रीमाताजी द्वारा अष्टलक्ष्मियों की व्याख्या

सर्वप्रथम आद्यलक्ष्मी हैं। आद्य अर्थात 'आदि' (Primordial) लक्ष्मी। जैसे मैंने आपको बताया था वे समुद्र से निकलीं थीं। तो ऐसा ही है। जैसे ईसा-मसीह की माँ को मेरी या मरियम कहा गया। क्योंकि उनकी उत्पत्ति सागर से हुई, कोई नहीं जानता कि उनको मेरी क्यों कहा गया। मेरा नाम 'नीरा' था- अर्थात जल से उत्पन्न हुई।

दूसरी विद्यालक्ष्मी हैं। ये आपको परमेश्वरी शक्ति को संभालने की विधि सिखाती हैं। ये बात अच्छी तरह समझ ली जानी चाहिए कि लक्ष्मी हैं क्या? वे करुणाशीलता हैं, अत: वे आपको सिखाती हैं कि इस शक्ति का सहृदतापूर्वक किस प्रकार उपयोग करें। अब, यही आशीर्वाद आपको प्राप्त हो रहा है कि आप आद्यलक्ष्मी की शक्ति को प्राप्त करें जिसके द्वारा आप जलसम बन जाएं। जल क्या है? जल में स्वच्छ करने की शक्ति है, जो मैं हूँ। जल के बिना हम जीवित नहीं रह सकते। अत: पहला आशीर्वाद ये है कि आपके चेहरे तेजोमय हो उठते हैं। आद्यलक्ष्मी की कृपा से स्वच्छ होकर आप सभी गम्भीर चीज़ों को, प्रकाश को तथा विस्मृत चीज़ों को देख सकते हैं।

विद्यालक्ष्मी, मैंने आपको बताया, ज्ञान प्रदान करती हैं। ज्ञान, कि परमेश्वरी शक्ति को सहृदतापूर्वक किस प्रकार संभालना है। मैं एक उदाहरण दूंगी, मैंने बहुत से लोगों को बन्धन देते हुए देखा है, उनका तरीका अत्यन्त बेढबा होता है। नहीं इस प्रकार नहीं किया जाना चाहिए। ये लक्ष्मी है। अत: यह कार्य अत्यन्त सावधानीपूर्वक करें। आप मुझे देखें, मैं कैसे बन्धन देती हूँ। मैं इस प्रकार कभी नहीं करती। कर ही नहीं सकती। सम्मानपूर्वक, गरिमापूर्वक। वे सम्मानपक्ष का प्रतिनिधित्व करती हैं और गरिमापूर्वक यह कार्य करने का ज्ञान आपको प्राप्त होता है। सभी कार्य गरिमापूर्वक किए जाने चाहिएं, ऐसे तरीके से कि गरिमामय लगें। कुछ लोग बातचीत करते हैं परन्तु उनमें गरिमा नहीं होती! सहजयोग का ज्ञान देने वाले कुछ लोगों में भी गरिमा बिल्कुल नहीं होती और वे अत्यन्त गरिमाविहीन तरीके से बात करते हैं। परमेश्वरी ज्ञान को गरिमापूर्वक किस प्रकार उपयोग करना है, यह आशीर्वाद विद्यालक्ष्मी प्रदान करती है।

सौभाग्य लक्ष्मी- वे आपको सौभाग्य प्रदान करती हैं। सौभाग्य का अर्थ पैसा नहीं है, इसका अर्थ है पैसे की गरिमा। पैसा बहुत से

लोगों के पास है परन्तु यह पैसा वैसा ही है जैसे गधे के ऊपर धन का लदा होना। ऐसे व्यक्ति में आपको गरिमा बिल्कुल नहीं दिखाई देती। सौभाग्य का अर्थ केवल पैसा ही नहीं है। इसका अर्थ है खुशकिस्मती, हर चीज़ में अच्छा भाग्य। आशीर्वाद का अत्यन्त गरिमापूर्वक उपयोग ताकि आप भी आशीर्वादित हों और आपसे मिलने वाले लोगों को भी सौभाग्य का वह आशीष प्राप्त हो।

अमृतलक्ष्मी- अमृत का अर्थ है अमृत, जिसे लेने के बाद मृत्यु नहीं होती अर्थात चिरंजीवी होना। अमृतलक्ष्मी आपको अनन्त जीवन प्रदान करती हैं।

गृहलक्ष्मी- गृहलक्ष्मी परिवार की देवी हैं। ज़रुरी नहीं कि सभी गृहणियाँ गृहलक्ष्मियाँ हों। वे कलहणियाँ भी हो सकती हैं, भयानक महिलाएं भी हो सकती हैं। परिवार के देवता का निवास यदि आपके अन्दर है केवल तभी आप गृहलक्ष्मियाँ हैं अन्यथा नहीं।

इसके बाद राज्यलक्ष्मी हैं- वे राजाओं को गरिमा प्रदान करती हैं। राजा यदि नौकर की तरह से व्यवहार करे तो उसे राजा नहीं कहा जाना चाहिए। उन्हें अत्यन्त सम्मानपूर्वक व्यवहार करना होगा। राजा की गरिमा, उसका प्रताप, राजलक्ष्मी का वरदान है। परन्तु सहजयोगी राजा नहीं होता वह अत्यन्त शानदार तरीके से चलता है, भव्य तरीके से कार्य करता है, और अत्यन्त भव्यतापूर्वक लोगों से व्यवहार करता है। अपने सभी कार्यों में वह इतना गरिमामय होता है कि लोग सोचते हैं कि देखो राजा आ रहा है!

सत्यलक्ष्मी-सत्यलक्ष्मी के माध्यम से आपको सत्य की चेतना प्राप्त होती है। उसके अतिरिक्त भी सत्यचेतना विद्यमान है परन्तु इस सत्य को आप अत्यन्त भव्य तरीके से प्रस्तुत करते हैं। ये सत्य है, आप इसे स्वीकार करें, ऐसे नहीं। सत्य से आपने लोगों को चोट नहीं पहुँचानी। फूलों में रखकर आपने लोगों को सत्य देना है। ये सत्यलक्ष्मी है।

नि:सन्देह ये सभी लक्ष्मीतत्व हमारे हृदय में स्थापित शक्तियाँ हैं परन्तु वास्तव में इनकी अभिव्यक्ति हमारे मस्तिष्क में होनी चाहिए। मस्तिष्क विराट है, यह विष्णु है जो विराट बनते हैं। अत: ये सभी शक्तियाँ, विशेषरूप से यह शक्ति (सत्यलक्ष्मी) मस्तिष्क में है। अत: मस्तिष्क स्वत: इस प्रकार कार्य करता है कि लोग सोचते हैं कि यह कोई विशिष्ट व्यक्तित्व है। सहजयोगी को हमेशा समझ होती है कि

आनन्द किस प्रकार उठाना है। सहजयोगी कभी चिन्तित नहीं होता। आपको भी आनन्द लेने के योग्य होना चाहिए। मान लो आप कोई बेढबी, या हास्यास्पद चीज़ देखते हैं तो आपको हँसना और आनन्द लेना चाहिए। ये बहुत कठिन कार्य है। बेढबी चीज़ का आनन्द लेना। कोई यदि अटपटा या भद्दा हो तो उस पर गुस्सा नहीं करना चाहिए, उसे आनन्ददायक बना लेना चाहिए। ये महानतम चीज़ है, मेरे विचार से यह महानतम आशीर्वाद है जो वे आपको प्रदान करती हैं- आनन्द लेने की शक्ति। अन्यथा आप जो चाहे प्रयत्न करें, लोग किसी चीज़ का आनन्द नहीं लेते, क्योंकि वे इतने अहंवादी हो गए हैं कि उनके मस्तिष्क में कुछ घुसता ही नहीं। उन्हें तो किसी छड़ी से गुदगुदाना पड़ेगा।

योगलक्ष्मी- जो आपको योग प्रदान करती हैं- ये शक्ति आपके अन्दर हैं। आपके अन्तःस्थित लक्ष्मी की शक्ति अर्थात आप अन्य लोगों को योग प्रदान करते हैं। जब आप अन्य लोगों को योग की शक्ति प्रदान करते हैं, मेरा अभिप्राय है कि जब आप अपनी योग शक्ति का उपयोग करते हैं तब बन्दर, गधे या घोड़े की तरह से व्यवहार नहीं करते। गरिमापूर्वक ये कार्य करते हैं। इस प्रकार इस कार्य को करें कि यह अत्यन्त गरिमामय हो, अर्थात अत्यन्त भद्र, गरिमामय एवं भव्य तरीके से। तो यह इस प्रकार है। अब जब आपने इस प्रकार इसका स्तुति गान किया है, इस शक्ति से आपको आशीर्वादित कर दिया गया है। अब यदि आप चाहें तो भी गरिमाविहीन आचरण नहीं कर सकते। आपको स्थिर कर दिया गया है। हार्दिक धन्यवाद।''

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी
कोमो, इटली, 25.10.1987

लक्ष्मी तत्व

दिवाली शब्द दो शब्दों से बना है- दीप+आवली। दीप अर्थात दीपक तथा आवली अर्थात पंक्ति-दीप-पंक्तियाँ। यह अत्यन्त प्राचीन प्रथा है और विश्व भर में सभी उत्सवों के समय दीप जलाए जाते हैं। दीपज्योति आनन्द एवं प्रसन्नता प्रदान करती है। अज्ञान अन्धकार पर विजय प्राप्त करने के लिए हमें भी स्वयं को ज्योतिर्मय करना होगा और इसी कारण

पूजा करती हैं। भाइयों को निमन्त्रित किया जाता है, विशेष आसन पर उनको बिठाया जाता है और उनकी आरती की जाती है। भाई अगर छोटी आयु का हो तो उसे स्नान भी करवाया जाता है। बड़े भाईयों पर भी प्रतीकात्मक रूप से जल छिड़का जाता है। पहनने के लिए उन्हें नए वस्त्र दिए जाते हैं और उनके लिए खास खाना बनाया जाता है। पतियों से पहले भाईयों को खाना दिया जाता है यद्यपि प्राय: पतियों को ही पहले खाना परोसा जाता है। साला जीजे को बहुत छेड़ता है। ये दिन **'भैयादूज'** कहलाता है। दिवाली में चाँद का दूसरा दिन। उस दिन भाई-बहन को कुछ न कुछ उपहार देते हैं।..... अपने प्रेम के प्रतीक के रूप में कुछ उपहार. .....इस दिन हम सबको साथ होना चाहिए। गृहलक्ष्मी के लिए भाई बहुत महत्वपूर्ण हैं। भाई-बहन सम्बन्ध सहजयोग सामूहिकता का आधार है।

महालक्ष्मी के आठ पक्ष हैं:-

1. **आद्यलक्ष्मी:** 'आद्यलक्ष्मी' अर्थात 'महालक्ष्मी' आदि, आद्य, आद्यलक्ष्मी- प्रथम हैं।

2. **विद्यालक्ष्मी :** विद्या सहजयोग की कला है जिसे आप जानते हैं, यही विद्या है, बाकी सब अविद्या है, किस प्रकार कुण्डलिनी उठाएं, सभी देवी-देवताओं को किस प्रकार जागृत करें, किस प्रकार अपना शुद्धिकरण करें, किस प्रकार अन्य लोगों का शुद्धिकरण करें, ये सभी ज्ञान, इसके विषय में सभी विज्ञान, विद्या कहलाती है, उसकी लक्ष्मी। लक्ष्मी गरिमा हैं, ये गरिमा हैं। चेतना..... यही गरिमा है। गरिमामय चेतना। वह लक्ष्मी आपके साथ होनी चाहिए। केवल इतना ही नहीं कि आपमें वह विद्या हो, परन्तु इस विद्या की गरिमा होनी भी आवश्यक है। .....जिस प्रकार लोग कार्य करते हैं, मैं जब प्रवचन दे रही होती हूँ और लोग अपने पर कार्य कर रहे होते हैं। यह अत्यन्त लज्जा एवं निराशाजनक है.....आप यदि गरिमाविहीन हैं तो ये विद्या व्यर्थ है। लोग उल्टे-सीधे ढंग से हाथ हिलाते रहते हैं.....किस प्रकार वे अपने हाथ व अंगुलियाँ हिलाते हैं! तो ये विद्यालक्ष्मी है। **लक्ष्मी विद्या के अन्दर की गरिमा है।**

3. **सौभाग्यलक्ष्मी :** सौभाग्य अर्थात खुशकिस्मती। लक्ष्मी जी आपको सौभाग्य प्रदान करती हैं, वे आपको धन, जीवन-शैली, भोजन आदि के मामले में सौभाग्य प्रदान करतीं है और सौभाग्य परमात्मा के माध्यम से आता है। केवल परमात्मा ही सौभाग्य प्रदान करते हैं। घुड़दौड़ के माध्यम से यदि आपके पास धन आ जाता है तो वह बद्किस्मती है। ये धन

या तो अगले दिन समाप्त हो जाएगा या आप चण्ड्रखाने पहुँच जाएंगे। परन्तु पैसा यदि परमात्मा के माध्यम से आएगा तो आप उससे कोई अच्छी चीज़ बनाएंगे। ये सौभाग्यलक्ष्मी है....."

4. **अमृतलक्ष्मी** : अमृत अर्थात जिसकी मृत्यु न हो। संसार में लक्ष्मी आप के वैभव रूप में रहती है। ऐसा कौन सा धन है जिसकी मृत्यु नहीं होती। यह आत्मा है। **अतः आत्मा की कृपा अमृतलक्ष्मी है।** आत्मा की कृपा ही अमृतलक्ष्मी है बाकी सब चीज़ों की मृत्यु हो जाती है। आत्मा के माध्यम से, आत्मा को प्रसन्न करने के लिए किया गया कार्य अमृतलक्ष्मी है। उदाहरण के रूप में अन्य लोगों से प्रेम करना। इसका प्रतीकात्मक अर्थ आप समझते हैं। प्रेम करना अर्थात देना- निर्वाज्य कार्य करना और आनन्द लेना। चैतन्य देना सर्वोत्तम है। यह अमृत है। चैतन्य का अन्त नहीं होता। यही अमृतलक्ष्मी है।

5. **गृहलक्ष्मी** : गृहलक्ष्मी के विषय में आप जानते हैं।

6. **सत्यलक्ष्मी** : मैंने आपको चेतना के विषय में बताया था। यही आपको चेतना प्रदान करती है। चेतना लक्ष्मी जी का गुण है..... अपनी चेतना में जब आप उठते हैं तो आपको सत्य का ज्ञान होता है। सत्य क्या है? सत्य है क्या? हमें किस चीज़ की चेतना है? आप इस बात के प्रति चेतन हैं कि आप परमात्मा के माध्यम हैं और वे आपके माध्यम से कार्य कर रहे हैं। इसकी चेतना आपको इसलिए है क्योंकि यह आपके मध्यनाड़ी तन्त्र पर प्रवाहित हो रही है। इस सत्य के प्रति आपको चेतन होना है। दूसरा सत्य क्या है? कि आप कौन हैं? आप आत्मा हैं। तीसरा सत्य ये है कि मैं कौन हूँ? चौथा सत्य ये है कि परमात्मा कौन हैं? आपके देवी देवता कौन हैं? यदि वे आपकी चेतना बन जाते हैं तब समझें कि आपको सत्यलक्ष्मी प्राप्त हो गई हैं।

7. **भोग्यलक्ष्मी** : भोग्यलक्ष्मी अर्थात जिसके माध्यम से आप आनन्द लेते हैं....." वास्तव में ऐसा है कि आनन्द का पूरा सागर आपके चहुँ ओर है और नाव की तरह से आप इसका आनन्द नहीं ले सकते। केवल भोग्य लक्ष्मी की कृपा से आप इस सागर का आनन्द ले सकेंगे। यद्यपि आत्मा की अभिव्यक्ति हो रही है फिर भी आप इसका आनन्द नहीं ले पा रहे। जैसे यदि आप किसी फूल को देखें तो इसका आनन्द लेने का क्षेम आपमें होना चाहिए। परन्तु आप आनन्द नहीं ले सकते क्योंकि आप विचारों में फँसे हैं। विचारों में फँसे होने के कारण आप किसी भी चीज़ का आनन्द नहीं ले सकते। जब विचार नहीं होते, आत्मा प्रवाहित

हो रही होती है, तब आप पूर्ण आनन्द उठा सकते हैं। वास्तव में मुझे कहना चाहिए कि 'मैं भोक्ता हूँ।'

8. **योगलक्ष्मी** : लक्ष्मी की वह शक्ति जो योग प्रदान करती है। चेतना प्रदान करके लक्ष्मी आपकी योग शक्ति को आश्रय देती है। जिस लक्ष्मी के माध्यम से आप योग प्रदान करते हैं वह योगलक्ष्मी में निहित है। जैसे अपने वैभव से सन्तुष्ट न हो पाने पर आप योग प्राप्त करना चाहते हैं। योग प्राप्त हो जाने तक आप असन्तुष्ट रहते हैं और योगलक्ष्मी आपको योग प्रदान करती हैं। अत: योगलक्ष्मी का अर्थ वह शक्ति है जो आपको उस कृपा तक पहुँचाती है जिससे आप योग तक पहुँचते हैं। जो सन्तुष्टि आप खोज रहे होते हैं उसकी अभिव्यक्ति आपमें योगलक्ष्मी की शक्ति से होती है। एक बार योग प्राप्त होने पर आपको कृपा प्राप्त हो जाती है। लक्ष्मी ही कृपा हैं। आपको सन्तों जैसी गरिमा प्राप्त हो जाती है। सन्तों की गरिमा आपमें होनी चाहिए, आपको सन्तों जैसा लगना चाहिए, आप सन्त हैं..... जिस व्यक्ति को योगलक्ष्मी प्राप्त है वह पागलों की तरह से झगड़ता नहीं है, कोई यदि झगड़ता है या दूसरों पर रोब झाड़ता है तो अभी तक उसमें योगलक्ष्मी का अभाव है....."

'एक अन्य चीज जो मैं कहना चाहती हूँ कि लक्ष्मी के इर्द-गिर्द भवसागर है और जहाँ भी नकारात्मकता होती है लक्ष्मी भाग खड़ी होती हैं। वे घबरा जाती हैं..... नकारात्मकता उन्हें पसन्द नहीं है। नकारात्मकता के आते ही वे चली जाती हैं। इसीलिए..... महान सन्तों ने कहा है कि मद्यपान करनेवाले लोगों की लक्ष्मी तीसरी पीढ़ी तक बिल्कुल समाप्त हो जाती है.....।

"अब हमें समझना होगा कि लक्ष्मी बहुत ही संवेदनशील हैं। ..... धर्मान्धता के मामले में तो वो बहुत ही संवेदनशील है। आपमें यदि धर्मान्धतापूर्ण विचार होंगे तो वो चली जाएंगी। जिस देश में धर्मान्धता होगी वो दिनोंदिन गरीब होता जाएगा। सभी प्रकार की धर्मान्धताओं के कारण लक्ष्मी की सभी शक्तियाँ अन्दर से चली जाती हैं और यह कैंसर आदि रोगों को निमन्त्रण देना होता है। धर्मान्धता को कोढ़ समझकर सहजयोगियों को इससे बचना चाहिए..... किसी भी धर्म को छोटा कहना, उसका अपमान करना, लक्ष्मी जी के सिद्धान्त के बिल्कुल विरुद्ध है....."

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी
हैम्पसटैड लन्दन, 9 नवम्बर 1980